OM-10- 2021 FINAL FILE_Page 1 and 2 27-Jul-21 1:48 PM Page 3

नई दिल्ली। जे.पी. नड्डा,राष्ट्रीय अध्यक्ष,भारतीय जनता पार्टी को ज्ञान चर्चा के पश्चात् ब्रह्माकुमारीज़ के ईश्वरीय सेवाओं की रिपोर्ट देते हुए ब्र.कु. प्रकाश चन्द,माउण्ट आबू। साथ हैं ब्र.कु. मृत्युंजय,कार्यकारी सचिव,ब्रह्माकुमारीज़,माउण्ट आबू, ब्र.कु. शिविका,संयोजिका,शिक्षा प्रभाग,ब्रह्माकुमारीज़,माउण्ट आबू तथा ब्र.कु. शैलेष,बोकारो।

नई दिल्ली। आध्यात्मिक चर्चा एवं ब्रह्माकुमारीज़ के ईश्वरीय सेवाओं से अवगत कराने के पश्चात् हरदीप सिंह पुरी,यूनियन मिनिस्टर ऑफ पेट्रोलियम एंड नैचुरल गैस,हाउसिंग एंड अर्बन अफेयर्स,भारत सरकार को प्रसाद देते हुए ब्र.कु. प्रकाश चंद। साथ हैं ब्र.कु. शिविका,संयोजिका,शिक्षा प्रभाग तथा ब्र.कु. शैलेष,बोकारो।

नई दिल्ली। आध्यात्मिक चर्चा एवं ब्रह्माकुमारीज़ के ईश्वरीय सेवाओं से अवगत कराने के पश्चात् सांस्कृतिक एवं पर्यटन मंत्री किशन रेड्डी,भारत सरकार को गुलदस्ता देते हुए ब्र.कु. मृत्युंजय,कार्यकारी सचिव,ब्रह्माकुमारीज़ तथा ब्र.कु. प्रकाश चंद,माउण्ट आबू। साथ हैं ब्र.कु. शिविका,संयोजिका,शिक्षा प्रभाग,ब्रह्माकुमारीज़,माउण्ट आबू।

मोर पंखी से सुशोभित जिनका सिर है, अधर पर जिनकी बांसुरी है, नटराज सा जो खड़ा होता है, जिनकी भाव-भंगिमाओं के अनेकों दीवाने हैं, जिनका नृत्य अनेकों के अंदर स्पंदन पैदा कर देता, उस मनमोहक श्री कृष्ण के जन्म की बाट सभी निहार रहे हैं। उनके जन्म के उत्सव को मनाने के सब लालायित हैं, पर शामिल कैसे हों, ये पहेली जल्द ही सुलझने वाली है, तो आप भी इसमें शामिल होकर श्री कृष्ण जन्म और उनके दर्शन के लिए तैयार हो जायें...

ब्र.कु. जगदीशचन्द्र हसीजा

चलें... श्रीकृष्ण का जन्म 'उत्सव' मनाने

हर वर्ष भारत में जन्माष्टमी के दिन श्रीकृष्ण का जन्मोत्सव बड़ी धूमधाम से मनाया जाता है। हर एक माता अपने बच्चे को नयनों का तारा और दिल का दुलारा समझती है परंतु फिर भी वह श्रीकृष्ण जी के बचपन के रूप को देखने की चेष्टा करती है। भक्त लोग श्रीकृष्ण को 'सुन्दर', 'मनमोहन', 'चित्तचोर' इत्यादि नामों से पुकारते हैं। वास्तव में श्रीकृष्ण का सौन्दर्य चित्त को चुरा ही लेता है। जन्माष्टमी के दिन जिस बच्चे को मोर-मुकुट पहना कर, मुरली हाथ में देते हैं, लोगों का मन उस समय उस बच्चे के नाम, रूप, देश व काल को भूल कर कुछ क्षणों के लिए श्रीकृष्ण की ओर आकर्षित हो जाता है। सुन्दरता तो आज भी बहुत लोगों में पाई जाती है परंतु श्रीकृष्ण सर्वांग-सुन्दर थे, सर्व गुण सम्पन्न, 16 कला सम्पूर्ण थे। ऐसे अनुपम सौन्दर्य तथा गुणों के कारण ही श्रीकृष्ण की पत्थर की मूर्ति भी चित्तचोर बन जाती है।

इस कलियुगी सृष्टि में एक भी ऐसा व्यक्ति नहीं होगा जिसकी वृत्ति, दृष्टि कलुषित न बनी हो, जिसके मन पर क्रोध का भूत सवार न हुआ हो अथवा जिसके चित्त पर मोह, अहंकार का धब्बा न लगा हो। परंतु श्रीकृष्ण जी ही ऐसे थे जिनकी दृष्टि, वृत्ति कलुषित नहीं हुई, जिनके मन पर कभी क्रोध का प्रहार नहीं हुआ, कभी लोभ का दाग नहीं लगा, वे नष्टोमोहा, निरहंकारी तथा मर्यादा पुरुषोत्तम थे। उनको सम्पूर्ण निर्विकारी कहने से सिद्ध है कि उनमें किसी प्रकार का रिंचक मात्र भी विकार न था। जिस तन की मूर्ति सजा कर मंदिर में रखी जाती है, उनका मन भी तो मंदिर के समान ही था। श्रीकृष्ण केवल तन से ही देवता न थे, उनके मन में भी देवत्व था। जिस श्रीकृष्ण के चित्र को देखते ही नयन शीतल हो जाते हैं, जिसकी मूर्ति

के चरणों पर जल डाल कर लोग चरणामृत पीते हैं और इससे ही अपने को धन्य मानते हैं, यदि वे वास्तविक साकार रूप में आ जाएँ तो कितना सुखमय, आनंदमय, सुहावना समय हो जाए।

श्रीकृष्ण पर मिथ्या कलंक

श्रीकृष्ण, जिनके लिए गायन है कि वे सोलह कला सम्पूर्ण, सम्पूर्ण निर्विकारी, परम अहिंसक, मर्यादा पुरुषोत्तम थे। जिनमें काम, क्रोध, लोभ, मोह तथा अहंकार अंश-मात्र भी नहीं थे। जिनकी भक्ति से अथवा नाम लेने से ही भक्त लोग विकारी वासनाओं पर विजय पाते हैं, उन पर लोगों ने अनेक मिथ्या कलंक लगाए हैं कि श्रीकृष्ण की 16108 रानियाँ थीं, वह हर रानी के कमरे में एक ही समय पर उपस्थित होते थे तथा कृष्ण जी से उनके दस-दस पुत्र थे अर्थात् श्रीकृष्ण जी के 1,61,080 पुत्र हुए। विचार करने की बात है कि क्या ऐसा इस साकार लोक में सम्भव है? श्रीकृष्ण तो सर्वोच्च देवात्मा थे जिनमें कोई भी विकार लेशमात्र भी न था, जिनकी भक्ति से मीरा ने काम वासना पर विजय पाई और सूरदास, जिन्हें सन्यासोपरान्त आँखों ने धोखा दिया, जिन्हें भी श्रीकृष्ण की भक्ति कर अपनी अपवित्र कामी दृष्टि को पवित्र बनाने का बल मिला। ऐसी पवित्र आत्मा, जिनके स्मरण से ही विकारी भावनाएं समाप्त हो जाती हैं, क्या उन पर ये मिथ्या कलंक लगाना उचित है?

इसके अतिरिक्त यह भी कहा जाता है कि श्रीकृष्ण ने द्वापर युग में महाभारत युद्ध करवाया जिससे आसुरी दुनिया का नाश हुआ और स्वर्ग की स्थापना हुई। परंतु द्वापर युग के बाद तो कलियुग अर्थात् कलह-क्लेश का युग ही आया। इसमें तो और ही पाप तथा भ्रष्टाचार बढ़ा, स्वर्ग की स्थापना कहाँ हुई? विचार कीजिए कि यदि अपवित्र दृष्टि, वृत्ति वाले लोग जैसे कंस, जरासंध, शिशुपाल आदि पावन श्रीकृष्ण को देख सकते हैं तो उनकी एक झलक के लिए भक्तों को नवधा भक्ति और सन्यासियों को घोर तपस्या करने की आवश्यकता क्यों पड़ी? यदि श्रीकृष्ण की दुनिया में भी इतने पापादि और दुष्ट व्यक्ति थे तो आज की दुनिया को ही नर्क क्यों कहा जाए? वास्तविकता तो यह है कि श्रीकृष्ण की दुनिया में कंस, जरासंध, शिशुपाल जैसे आसुरी वृत्ति वाले लोग थे ही नहीं और न ही उस समय कोई पाप अथवा भ्रष्टाचार का नामोनिशान था क्योंकि श्रीकृष्ण का जन्म तो द्वापर में नहीं बल्कि सतयुग के आरंभ में होता है।

क्या हम श्रीकृष्ण के दर्शन कर सकते हैं?

इस संसार में यदि कोई व्यक्ति बहुत सुंदर होता है तो लोग कहते हैं कि ब्रह्मा अथवा विश्वकर्मा ने इस पर अपनी सारी कारीगरी लगा दी है। कोई कहता है कि इसे तो भगवान ने अपने हाथों से स्वयं रचा है तथा कई ऐसा भी कहते हैं कि इसका सौन्दर्य तो न्यारा ही है, तो ऐसे ही न्यारे सतोगुणी तत्वों से प्रकृति ने श्रीकृष्ण जी की छवि को रचा था। जन्म से ही उन्हें पवित्रता तथा रत्न-जड़ित ताज प्राप्त थे। ऐसे सतोप्रधान पुरुष को निहारने के लिए उन जैसा ही श्रेष्ठ जीवन बनाने की आवश्यकता है। जैसे कहावत भी है- 'जहाँ काम है वहाँ राम नहीं, जहाँ दिन है वहाँ रात नहीं, जहाँ सुख है वहाँ दुःख नहीं, जहाँ भोग है वहाँ योग नहीं', अतः स्पष्ट है कि सम्पूर्ण अहिंसक, सम्पूर्ण निर्विकारी, योगेश्वर श्रीकृष्ण की दुनिया में कोई भी कामी, क्रोधी अथवा भ्रष्टाचारी व्यक्ति हो ही नहीं सकता।

वर्तमान समय कलियुग के अन्त में ब्रह्मचर्य का व्रत लेने वाले योगीजन, सम्पूर्ण पवित्रता को प्राप्त करने के पश्चात् अर्थात् तमोप्रधान से सतोप्रधान बनने के पश्चात् ही सतयुग के आदि में श्रीकृष्ण के सच्चे जन्म-दिन को अपने नेत्रों द्वारा देख भी सकते हैं और स्वर्ग अर्थात् सतयुग में गोप-गोपियाँ बन श्रीकृष्ण के साथ मंगल-मिलन भी मना सकते हैं।